

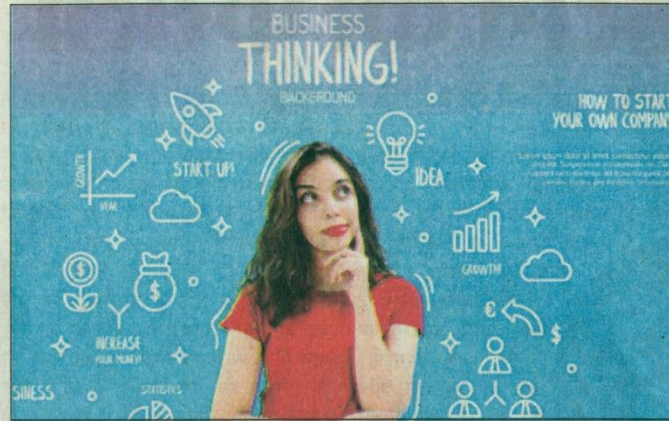
स्टार्टअप्स के एक्सपेंशन में रही कमी

चेन्नई/एजेंसी

वर्ष 2019 में सरकार ने स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने वाली अनेक घोषणाएं की थी। लेकिन इसके बावजूद गत वर्ष 546 2 स्टार्टअप्स ही अस्तित्व में आ पाये। ट्रेक्सेन के डाटा के अनुसार यह संख्या 2018 के मुकाबले में 35 फीसदी कम है। 2011 से तुलना करें तो यह संख्या सबसे कम है। सबसे ज्यादा फिनटेक, रिटेल क्षेत्र में स्टार्टअप की कमी देखी गई।

संभव है कि इस कैटेगरी में प्रतिस्पर्धा ज्यादा रही हो और यह न्यू एंट्रीज के लिए बाधक बनी हो।

वर्ष 2014 में शुरुआत करने वाली पिकयोअरट्रेल नामक स्टार्टअप के सह-संस्थापक ने कहा है कि 2014 से 2016 के बीच स्टार्टअप, फंडिंग, इको सिस्टम में तेज



विस्तार का दौर रहा। युवा इस ओर आकर्षित नजर आये और अपना वेंचर शुरू करने के प्रति उत्साह दिखा था। 2017 के

बाद इस इको सिस्टम में सेंस ऑफ रैशनल बिलीफ नजर आया। पिकयोअरट्रेल पर्सनल ट्रेवल वेंकेशन प्लानिंग के क्षेत्र में काम कर

रही है। वर्ष 2019 में स्टार्टअप सेक्टर्स में ओवरऑल फंडिंग 20.44 बिलियन डॉलर की रही। यह आंकड़ा गत पांच वर्षों में सबसे ज्यादा रहा है।

दूसरी ओर स्टार्टअप की संख्या में कमी रही। दोनों ही आंकड़े अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। यह भी देखने वाली बात है कि 2016 के बाद जिन कम्पनियों को फंडिंग मिली उसमें भी कमी आई है। रियेलिटी फिगर यह भी है कि यूनीकॉर्न क्लब देश में विस्तार ले रहा है।

इनकी संख्या 2018 में 17 थी जो गत वर्ष 24 हो गई। गौरतलब है कि यूनीकॉर्न क्लब में वे स्टार्टअप आते हैं जिनकी वैल्यूएशन एक बिलियन डॉलर से ज्यादा होती है। ट्रेड्स यह बता रहे हैं कि निवेश विनिंग स्टार्टअप्स में हो रहा है, फिर चाहे वे विभिन्न कैटेगरीज के हों।